दिनांक :- 17-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- चतुर्थ दो

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- संगम काल स्त्रोत

पांड्य शासन की जानकारी के स्त्रोत के लिए मेगास्थनीज के विवरण, अशोक के अभिलेख, महाभारत, रामायण आदि महत्वपूर्ण है। मेगास्थनीज ने पँड्या द्वारा शासित पांड्य राज्य का विलक्षण वर्णन प्रस्तुत किया है। यह उल्लेख है कि पांड्य हेराक्लीज की पुत्री थी। उसे उसने उत्तर भारत का वह भाग दिया था जो दक्षिण की ओर है तथा समुद्र तक जिसकी

सीमा है। पांड्यों के भी अन्य पर्यायवाची नाम थे, जैसे
मिनावर, कवूरियार, पंचावर, तेन्नार, सेलियार, मशश,
वालुडी आदि।
पांड्य की राजधानी मदुरई तथा राजकीय चिन्ह मछली था
कौटिल्य के अनुसार मदुरई कीमती, मोतियो, उच्च कोटि
के वस्त्र एंव विकसित वाणिज्य व्यापार के लिए प्रसिद्ध था
पांड्यो की प्रारंभिक राजधानी कोरकई थी। नेडियोन
(लंबा आदमी) प्रमुख पांड्य शासक था। इसने पहरुली
नदी को अस्तित्व प्रदान किया तथा सागर पूजा की
प्रथा प्रारंभ करवाई।
इसके पश्चात पलशाल्मुदुत्तो कुडमि शासक बना। वेल
विक्री दान पत्र के अनुसार यह पांड्य वंश का
प्रथम ऐतिहासिक शासक था।
इस शासक को अनेक उपाधि दी गई है जिसमे प्रमुख

है पलशाय - इसका अर्थ है अनेक यज्ञशालाएँ बनाने वाला। इस वंश का प्रमुख शासक नेडूनजेलियन था। उसे तलैयालंगानाम युद्ध को जीतने के श्रेय दिया जाता है। उसने 210 ई० तक राज्य किया। दो महान संगम कवि मानगुडि किल्लार तथा नक्किरार ने पूरम तथा अहम के साथ पत्तुप्पट्टु में इस शासक के संबंध में एक-एक कविता लिखी है। नेडूनजेलियन ने चेर शासक शेंक को पराजित करके बंदी गृह में डाल दिया था। उसने रोम सम्राट ऑगस्टस सीजर के दरबार में राजदूत भेजा था। इसी ने कन्नगी के पति कोवलन को मदुरा में मृत्युदंड दिया था। शिलप्पादिकारम् के अनुसार इसी पश्चाताप में इसने आत्महत्या कर ली थी। इस राजा से संबंधित एक छोटी कविता में जाने में ज्ञान की को जन्म तथा जाति से ऊँचा बताया गया है।

संगम ग्रंथ में नल्लिक्कोडम को संगम युग का अंतिम शासक माना जाता है।

Scanned with CamScanner

राजनीतिक व्यवस्था

संगम राज्य एक प्रकार के कुल राज्य संघ के समान थी इस प्रकार के राज्य का उल्लेख अर्थशास्त्र मे भी हुआ है।

संगम युगीन राज्य राजतंत्रात्मक तथा वंशानुगत होता था राजपद के लिए झगड़े तथा गृह युद्ध भी होते थे।

संगम युगीन शासक को मन्नरम. वेन्दन. कारेवार इरैवन तथा को आदि उपाधियो मिलती थी। को उपाधि से देवता को भी विभूषित किया जाता था।

राजा सभी अर्थो मे निरंकुश होता था जिसकी निरंकुशता मे विद्वानो की उक्तियो और किसी मंत्री, कवि तथा राजा के किसी मित्र द्वारा समय-समय पर होने वाले हस्तक्षेप से कमी हो पाती थी। राजा अपने व्यक्तिगत आचरण मे न्यायप्रिय होते थे और यही उस काल का आदर्श भी था इससे जनता के हृदय मे

राजा का बड़ा सम्मान था राजा का मुख्य आदर्श दिग्वि
जय प्राप्त करना. प्रजा को संतान में स्वीकार करना तथा
पक्षपात रहित होकर शासन करना था।
राजा के लिये सबसे प्रशंसा की बात यह समझी जाती थी कि
उसने ऐसा कुछ नही किया जिससे ब्राह्मणों को दुख पहुँचा था।
राजा के जीवन काल में ही युवराज की नियुक्ति हो जाती थी।
जिसे कोइमन कहा जाता था। अन्य पुत्रों को इलंगो कहा जाता था।
पुरनानुरू की एक कविता मे चक्रवर्ती राजा की चर्चा की गई
है। इसी कृति की एक अन्य कविता मे राजा की मृत्यु के
बाद उसके साथी द्वारा आत्महत्या करने का उल्लेख है। मार्ग
आगे चलकर इस प्रथा ने व्यापक रूप संस्थाओ का रूप
ले लिया, जिनके नाम थे : अबु जईद (सम्मानित साथी) वील्ल
इक्कार. गरूर सहवासी आप-तूद बिगल्ल आदि।
राजा को जन्म दिन को पेरूनल कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

सभा के लिये संगम साहित्य में मनरम शब्द का प्रयोग मिलता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है भवन। इससे संबंधित दूसरा शब्द है पोडियाल जिसका अर्थ है सार्वजनिक स्थल। मनरम के अर्थ में अवैय शब्द भी मिलता है। राजा अपनी सभा में (नालवैय) प्रजा की कठिनाइयों पर विचार करता था।

सर्वोच्च न्यायलय भी मनरम कहलाता था। उल्लेख है कि उरैयपुर के मनरम में मलैयमान के लड़कों के अपराध की न्यायिक जाँच के पश्चात उन्हे मृत्युदंड दिया गया परंतु किलार के हस्तक्षेप के पश्चात उन्हे छोड़ दिया गया। संगम काल के बाद की कृति कुरल में सभा को सभी कार्यों को संपादित करने वाली साधारण परिषद कहा गया है।

ग्रामीण जीवन की सामाजिक एंव धार्मिक समस्याओं के समाधान के लिये भी मनरम नामक सभा होती थी।

Scanned with CamScanner

राजमहल मे एक विशेष प्रथा थी जो करलमारम या कादि मारम कहलाती थी। इसके अंतर्गत प्रत्येक शासक राजकीय अपनी शक्ति के प्रतीक मे अपने राजमहल मे महान वृक्ष रखते थे राजकीय दरबार मे सास्कृतिक कार्यक्रमो पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गायको के गाने के साथ नर्तकियाँ नाचती थी और उन्हे पानर या विडियलियर कहा जाता था

प्रशासन : राजा के प्रमुख सहायको मे ब्राह्मणो तथा मंत्रियो को स्थान दिया गया है राजा की महाभारत सहायता के लिये नाचती थी और उन्हे अधिकारियो को एक समूह होता था जो 5 समूहो मे विभाजित था।

(i) मंत्री : अमैईयच्चार : प्रधानमंत्री या मंत्री

(ii) पुरोहितहार : पुरोहित : धार्मिक विभाग

(iii) सेनापतियार : सेनापति : सेना विभाग का प्रमुख

(iv) दुतार : विदेशी विभाग (v) ओरार : गुप्तचर

Scanned with CamScanner